卐 श्रीमद्राघवो विजयते 卐

श्रीराघव भावदर्शनम्



बालरूप श्रीराघव (मुन्ना सरकार)

भावद्रष्टा एवं रचयिता :

धर्मचक्रवर्ती, महामहोपाध्याय, वाचस्पति

श्रीतुलसीपीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानन्दाचार्य

स्वामी श्रीरामभद्राचार्य जी महाराज

(चित्रकूटधाम)



धर्मचक्रवर्ती महामहोपाध्याय श्रीतुलसीपीठाधीश्वर
जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी श्रीरामभद्राचार्य जी महाराज
(चित्रकूटधाम)

श्रीराघवभावदर्शनम्

भावद्रष्टा एवं रचयिता :

धर्मचक्रवर्ती, महामहोपाध्याय, वाचस्पति
श्रीतुलसीपीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानन्दाचार्य
स्वामी श्रीरामभद्राचार्य जी महाराज
आजीवन कुलाधिपति
जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय
चित्रकूट (उ०प्र०)

प्रकाशक :
श्रीतुलसीपीठ सेवान्यास
आमोदवन, पो० नयागाँव
चित्रकूटधाम सतना (म०प्र०)
पिन कोड - 485331

प्रकाशक :
श्रीतुलसीपीठ सेवान्यास
आमोदवन, पो० नयागाँव
चित्रकूट, सतना (म०प्र०) पिन कोड–485331
दूरभाष : 07670–65478
05198–24413

द्वितीय संस्करण–श्रीरामनवमी संवत् २०५९

पुस्तक प्राप्ति स्थान :
श्रीतुलसीपीठ सेवान्यास
आमोदवन, पो० नयागाँव
चित्रकूटधाम, सतना (म०प्र०) पिनकोड–485331

न्यौछावर : १०/– (दस रुपये मात्र)

मुद्रक :
साहित्य सेवा प्रेस
१५६, छीपी टैंक, मेरठ (उ०प्र०)

पुरोवाक्

कन्दावदातं जनपारिजातं,
काकानुगं कल्पितकाकपक्षम्।
श्रीराघवं बाणधनुर्दधानं,
वक्रालकं बालकमाश्रयामि।।

जगन्नियन्ता सर्वसर्वेश्वर प्रभु श्रीराम अपनी अहैतुकी कृपा से किसी भी जीव से अपनी ललितलीला का गान कराने हेतु उसके मन में अपूर्व कल्पना कौशल का प्रसाद अर्पित कर देते हैं। इसमें प्रभु का न तो कोई स्वार्थ होता है और न ही कोई यशोलिप्सा। वे तो उस भावुक भक्त के मनोरथ पूर्ति के लिये ही ऐसी कृपा करते हैं। मेरे साथ कुछ ऐसी ही घटना घटी। एक बार श्री आनन्द वृन्दावन चम्पू का श्रवण करते समय महाकवि कर्णपूर का एक ऐसा श्लोक श्रवण किया जो मुझे बहुत प्रिय लगा। उसमें भगवान् श्रीकृष्ण को एक अलौकिक कमल से उत्प्रेक्षित किया गया। जो किसी भ्रमर के द्वारा सूंघा नहीं गया, वायु जिसकी सुगन्ध चुरा न सका, जो जल में उत्पन्न नहीं हुआ, जो कभी भी तरंगों की थपेड़ों से झकझोरा नहीं गया, जिसे कभी किसी ने देखा नहीं, ऐसा अलौकिक कमल सहसा चिदानन्द सरोवर से, श्री यशोदा जी की गोद में प्रकट हो गया।

अनाघ्रातं भृङ्गैरनपहृत सौरभ्यमनिलै
रनुत्पन्नं नीरे ष्वनुपहतमूर्मीभरकणैः।
अदृष्टं केनापि क्वचन च चिदानन्दसरसो
यशोदायाः क्रोडे कुवलयमिवौजस् तदभवत्।।

यह श्लोक आज से पाँच सौ वर्ष से भी पूर्व रचा गया। धर्मसम्राट् स्वामी श्री करपात्रीजी महाराज भी इसे बहुत प्रेम से गुनगुनाते थे। मुझे भी यह बहुत भाया। श्रीराघव सरकार की इच्छा से इस बार मध्य प्रदेश रायसेन जिले के बरेली मंच पर सम्मेलन के लिये मैं आहूत हुआ तेरह दिसम्बर दो हजार को। सहसा मेरे मन में प्रभु प्रेरणा हुई कि मैं भी ऐसा ही श्लोक बनाने का प्रयास करूँ जो बालरूप श्री राघव सरकार के प्राकट्य के सम्बन्ध में हो, मेरे राघव ने बिना ही प्रयास के कुछ ही क्षणों में मुझसे प्रथम श्लोक की रचना करा दी जिसमें किसी भी माने में कर्णपूर कवि से न्यून उत्प्रेक्षायें नहीं हैं। कहाँ कर्णपूर जैसा विराट व्यक्तित्व सम्पन्न महाकवि और कहाँ मैं अकिंचन लेखन वाचन में भी असमर्थ एक साधारण त्रिदण्डी संन्यासी फिर भी यह चमत्कार कैसा? इसके उत्तर में मैं केवल महाकवि सूरदास की एक पंक्ति ही उद्धृत कर सकूँगा–

"जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै,
अन्हरे कौ सब कछु दरसाई।।"

वास्तव में महाकवि कर्णपूर को तो प्रभु ने अपनी एक ही झाँकी के दर्शन कराये थे परन्तु मुझे अपनी अहैतुकी कृपा करके अपने प्राकट्य की आठ उत्प्रेक्षा झाँकियों के दर्शन कराये। प्रथम झाँकी में मुझे बालरूप श्रीराघव के मेघ रूप में दर्शन हुए और कर्णपूर की भाषा शैली में प्रथम शिखरिणी छन्द की रचना करके अपने समीप में बैठे हुए अपने वात्सल्य भाजन सुयोग्यतम शिष्य, जबलपुर कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिक, मानस प्रवक्ता डॉ० व्रजेश दीक्षित को सुनाया पुनः तत्काल ही चित्रकूट में फोन करके आप सबकी वन्दनीया बुआजी अपनी बड़ी बहन

(सुश्री डॉ० कुमारी गीता देवी मिश्रा) को बड़े उत्साह से श्रवण कराया। फिर तो मेरे आनन्द का क्या कहना? अपने वसिष्ठानन्दवर्धन श्रीराघव सरकार की प्रेरणा से बरेली के अनन्तर बीना में दो श्लोकों की फिर विदिशा में आने पर एक ही दिन में इस प्रकार के पाँच श्लोकों की रचना श्रीराघव-कृपा से सम्पन्न हो गई।

मुझे विश्वास है कि यह "श्रीराघवभावदर्शनम्" प्रकरण ग्रन्थ सम्पूर्ण श्रीवैष्णवों, श्रीबालरूप राघवसरकार (श्री शिशु रामचन्द्र) प्रभु के उपासकों एवं सुरभारती एवं हिन्दी के रससिद्ध साहित्यकारों एवं समस्त सनातनधर्मावलम्बी बहिन-भ्राताओं के हृदय सरोरुहों में भाव मकरन्द भर देगा।

राजद्रमेशैक कृपासनाथितं
प्रोद्दाम साहित्य सुधासमन्वितम्।
सद्भक्ति भूमच्छिखरिण्युदञ्चितं
देयाच्छुभं राघवभावदर्शनम्।।

इतिमंगलमाशास्ते

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य
स्वामी रामभद्राचार्यः
(चित्रकूटधाम)

卐 श्रीमद्राघवो विजयते 卐

श्री राघवभावदर्शनम्

अनापीतोऽपीत द्युभिरनभिभूतोऽमृत तृषा
अनाक्लिष्टः क्लेशैरनपहृत रोचिर्गुरुगृहैः।।
अनाश्लिष्टः सृष्ट्या स्मर शरकरस्यांक रहितो
दिवाकौ कौसल्या हरि हरिति पूर्णो हरिरभूत्।।१।।

भावानुवादः स्वर्ग प्राप्त करके भी देवगण जिसकी कलायें नहीं पी सके, तथा अमृत का पिपासु राहु जिसे कभी भी ग्रस नहीं सका जो कभी भी अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष तथा अभिनिवेश जैसे पाँचों क्लेशों से क्लिष्ट नहीं हुआ और गुरु पत्नी के द्वारा जिसके तेज का हरण नहीं किया गया, प्रत्युत आशीर्वादों से वर्धन ही किया गया, जो कामदेव के बाणों की सृष्टि से प्रभावित नहीं हुआ और जिसमें कभी भी किसी प्रकार का कलंक नहीं लगा ऐसा श्रीरामरूप पूर्ण चन्द्रमा कौसल्या रूप पूर्व दिशा में चैत्र रामनवमी के मध्याह्न में पृथ्वी पर प्रकट हुआ। भाव यह है कि साधारण चन्द्रमा की अपेक्षा श्रीरामचन्द्र जी में बहुत विलक्षणतायें हैं। सामान्य चन्द्रमा की कलायें कृष्णपक्ष में देवताओं द्वारा पी ली जाती हैं, और अमावस्या के दिन सूर्य से उसे कलाएँ प्राप्त होती हैं पर श्री रामचन्द्र जी की कलाओं का पान देवता नहीं कर सकते। इन्हें कैकेयी का कुकृत्य–राहु नहीं ग्रस पाया, चन्द्रमा क्षयी है पर श्रीरामचन्द्र जी सभी क्लेशों से मुक्त परमेश्वर हैं। चन्द्रमा गुरु पत्नी गमन से तेजोहीन है, परन्तु

श्रीरामचन्द्र जी अरुन्धती जी के आशीर्वाद से परम तेजस्वी हैं। चन्द्रमा कामुक है और भगवान् श्रीराम निष्काम हैं। चन्द्रमा सकलंक है, तथा भगवान् श्रीराम अकलंक हैं। ऐसे अलौकिक श्रीराघवरूप पूर्ण चन्द्र का कौसल्यारूपिणी पूर्व दिशा में पृथ्वी पर प्राकट्य हुआ।

पद्यानुवाद :—

स्वर्गहुँ पहुँचि सुर, जाकी कला पी न सके
कबहुँ न नीच राहु, जाहि ग्रस पायो है।
क्लेशित न भयो जो, कबहुँ पंच क्लेशहु ते
गुरु तियहुँ न जा को सुजस नसायो है।
भयो न प्रभावित कबहुँ काम बाण ते जो
कबहुँ कलंक जाहि परसि न पायो है।
गिरिधर भनै कौसिला सु प्राची दिशि मही
दिवस में राम पूर्ण चन्द्र प्रगटायो है ॥श्री॥

अनाधूतो झंझालिभिरनविगीतो मधुरवै
रनुद्भूतः सिन्धावनपहृत भूतोऽनिलजवैः।
अनाद्विष्टो गोभिर्दिति रिपुभुवोऽनुग्रह पयः
प्रसन्नः पर्जन्योऽजनि जनि गृहे कोऽपि समभूत्॥२॥

भावानुवाद : जिसे झंझावातों के समूह कभी झकझोर नहीं पाये अर्थात् जो भीषण विपत्तियों में भी एक रस रहा, वसन्त में मुखरित होने वाली कोकिल के द्वारा जिसकी निन्दा नहीं की गई, अर्थात् महर्षि वाल्मीकि कवि कोकिल ने जिसको सौ करोड़ रामायणों के स्वर में गाया, जो सागर में उत्पन्न नहीं हुआ तथा वायु के वेगों से

भी जिसकी जलसत्ता का हरण नहीं किया जा सका, अर्थात् जिसमें कृपावारिधारा निरन्तर विराजमान रहती है। सूर्यनारायण की किरणें जिससे कभी नहीं टकराईं, ऐसा भक्तानुग्रह जल से परिपूर्ण एक अपूर्व सर्वजनसुखदमेघ (श्रीराम रूप) श्री दशरथ जी की गृहलक्ष्मी श्रीकौसल्या जी के आँचल में घुमड़ पड़ा।

पद्यानुवाद :

झंझा को समूह जाको नहि झकझोरि सक्यो
पिकहुँ न निन्धो जाहि कोटि स्वरगायो है।
उपजो न सिन्धु में जो प्रबल पवन बेग
कबहुँ न जाकी जल राशि को चुरायो है।
रवि कि किरनहुँ ते कबहुँ न झगर्‌यो जो
कृपा वारिधारा जा को सुजस बढ़ायो है।
"गिरिधर" प्रभु रामरूप सो अपूर्व मेघ
कौसिला के आँचर वियत बिलसायो है ॥श्री॥

अनाचान्तो रोषात् कलश जनुषा वानर वरै
रनाबद्धो लुब्धैरनभिहत वीचिर्बुधगणैः।
अनाप्तोऽसल्लोकैरविचलरमारत्न रुचिरो
बभौ कः कौसल्या कलदृगवनौ सिन्धुरधिकः॥३॥

भावानुवाद : कुपित अगस्त्य के द्वारा जो सोखा नहीं जा सका, अर्थात् अगस्त्य जी ने ही जिसे राक्षस वधार्थ दिव्यास्त्रों का उपहार दिया, सामान्य सागर की भाँति जिसे नल-नील सरीखे श्रेष्ठ वानर सेतु के माध्यम से नहीं बाँध सके, अर्थात् जो सभी की मर्यादाओं का सेतु बना, अमृत लोभी देवता मन्थन द्वारा जिसकी तरङ्गों को

आहत नहीं कर पाये, जो पुण्य रहित दुष्ट लोगों के द्वारा कभी प्राप्त नहीं किया जा सका, ऐसा विष्णु के द्वारा भी न विचलित की हुई श्रीसीता रूप महालक्ष्मी तथा वात्सल्य आदि समस्त कल्याण गुण–गुण रत्नों से रमणीय श्रीरामरूप सुख महासागर श्री कौसल्या जी की नेत्र भूमि पर लहरा उठा।

पद्यानुवाद :—

सोख्यो न अगस्त जाहि कोप करि कबहुँक
बानर सुभटजाहि बाँधि नहि पायो है।
सुधा लोभी सुरगन बिबिध जतन करि
जा को न मथन कियो हारि हहरायो है।
पायो न कबहुँ जाहि पुण्यहीन दुष्ट लोग
जामे सीय रमा गुन रतन सुहायो है।
"गिरिधर" प्रभु राम महासुख सागर सो
कौसिलानयन भूमि पर लहरायो है ॥श्री॥

अनाक्रीतः कैश्चिद् द्रविण पतिभिर्नागर कजै
रनामुष्टो लोकैः क्वचिदनवसक्तो निजगले।
अनुत्पन्नः शैले पुनरनवकीर्णोऽसुकृतिभिः
पुरः कौसल्याया मरकतमणिस्वित् प्रकटितः॥४॥

भावानुवाद : बड़े–बड़े कुबेर जैसे कोई भी धनाढ्य गण जिसे कभी खरीद नहीं सके, तथा कुशल चोरगण भी जिसे चुरा नहीं पाये, दुष्ट लोग जिसे अपने गले में धारण नहीं कर सके, जो पर्वत में उत्पन्न नहीं हुआ तथा असज्जन लोग अपने असत् कर्मों से जिसे

विद्ध नहीं कर सके, ऐसे प्राकृत मणियों के सभी दोषों से मुक्त विशुद्ध चेतन घन श्री रामरूप इन्द्रनील श्री कौसल्या जी के समक्ष प्रकट हो गया।

पद्यानुवाद :

जाको न बेसाहि सके, धनद सरीखे धनी
जाको न चतुर चोर चपरि चुरायो है।
विविध जतनहुँ ते जाकहुँ असाधु लोग
हारि-हारि-हारे, हिय हार न बनायो है।
शैल में न उपज्यो जो नीच नर निकरन्हि
कोटिक कुतर्क सूचि जाको न बिंधायो है।
"गिरिधर" प्रभु सोई राम मरकत मणि
कौसिला के आँचर में छटा छहरायो है ॥श्री॥

अनालूनो लून त्रिदशमद वृक्षैरपि परै
रनाभग्नो भग्न द्रुमनिकर झंझालि रभसा।
अनुत्खातः खातोदधि भरणवार्वन्यवनतो
दृशो कौसल्यायाश्चल कलतमालः प्रददृशे॥५॥

भावानुवाद : देवताओं के भी मद वृक्ष को काट डालने वाले रावणादि शत्रु राक्षस जिसे काट नहीं पाये तथा बड़े-बड़े वृक्षों को भी उखाड़ फेंकने वाली झंझाओं के भयंकर वेग जिसे तोड़ नहीं सके अर्थात् जो भयंकरतम संकटों में भी अपनी सहज स्थिति में विराजमान रहा, जैसे वनवास, सीताहरण, रामरावण संग्राम आदि में भी प्रभु श्रीराम प्रसन्न ही रहे। सगर पुत्रों द्वारा खोदे हुए महासागर

को भी अपने प्रवाह से पूर्ण करनेवाली श्रीगंगा जी द्वारा सततवन्दित श्री सरयू जी के जल वेग से भी जो उखाड़ा नहीं गया अर्थात् श्री सरयू जी ने जिसका निरन्तर सिञ्चन किया ऐसा नित्य चेतनामय श्रीरामरूप अपूर्व सुन्दर तमाल वृक्ष श्रीकौसल्याजी के दर्शन का विषय बना अर्थात् माँ कौसल्या जी ने श्रीराम को तमाल वृक्ष के रूप में निहारा।

पद्यानुवाद :

देवन्ह के मद पूग पादप दलन हार
हेरि हिय हारे जाको दलि नहिं पायो है।
महा महा बिटप पछारन प्रचार पटु
झंझाहु न जाकहुँ पचारि पछरायो है।
सगर सुवन खन्यो सागर भरन वारि
गंग वन्द्य वारि जाको, बारे ते बढ़ायो है।
सोई "गिरिधर" प्रभु राघव तमाल तरु
कौसिला नयन थल चल हहरायो है ॥श्री॥

अनाप्लुष्टो रुष्ट त्रिपुर रिपुणामार्चित तनू
रनाजुष्टो दुष्टैः क्वचिदपि न कृष्टः कुचरितैः।
अनाकृष्टः क्लिष्टेऽरिभृदनभिसृष्टस्त्रिभुवना-
भिरामः कः कामो दशरथगृहिण्यां समभवत्॥६॥

भावानुवाद : क्रुद्ध भगवान् शंकर भी जिनको जला नहीं सके प्रत्युत भगवान् भूतभावन शिव जिनके श्रीविग्रह की निरन्तर पूजा-अर्चना करते हैं। दुष्ट लोग जिनकी कभी सेवा नहीं कर सके

और जो कभी भी कुत्सित चरित्रों से तथा ग्राम्य विषयों से प्रभावित नहीं हुए, जो कभी भी कपटी कुचालियों पर आकर्षित नहीं हुए तथा चक्रधारी भगवान् नारायण के द्वारा भी अपनी सन्तति के रूप में जिनकी सृष्टि नहीं की गई अर्थात् भगवान नारायण के भी जो अंशी तथा रचयिता हैं, ऐसे तीनों लोकों के नयनाभिराम सुखस्वरूप श्री रामरूप अपूर्व कामदेव, महाराज दशरथ की गृहलक्ष्मी कौसल्या जी के समक्ष सात्विक भावना से दृष्टिगोचर हुए।

पद्यानुवाद :

कुपित त्रिपुर रिपु जाको नहिं दहि सके
मूरति महेश जाकी पूजा मन लायो है।
जा को न भजत दुष्ट नीच कीच चरितनि
ग्राम विषयनि जाको नेकु न लुभायो है।
भयो न आकर्षित जो कपटी कुचालिन पै
चक्रधरहुँ न जासु तन प्रगटायो है।
"गिरिधर" सुख धाम राम सो अनूप काम
कौसिला समक्ष आइ छबि सरसायो है। ॥श्री॥

अनुद्भूतं पङ्.केष्वनभिहृत शोभं शशिकरै
रनापीतं भृङ्गैरनवचितवृन्तं वनगजैः।
अजुष्टं शैवालैरनधिगतगन्धं कुमतिभिः
सुकोषं कौसल्या सरसि वरमिन्दीवरमभूत्॥७॥

भावानुवाद : जो पाप रूप कीचड़ में उत्पन्न नहीं हुआ तथा चन्द्रमा की किरणों द्वारा भी जिसकी शोभा का हरण नहीं किया

जा सका अर्थात् जो सीता जी के मुखचन्द्र के समीप बहुत अधिक उल्लसित हुआ, विषयी भ्रमर जिसके प्रेम मकरन्द का पान नहीं कर सके तथा रावण, कुंभकर्ण सरीखे जंगली हाथी भी जिसकी जड़ नहीं उखाड़ पाये प्रत्युत स्वयं ही जड़ से उखड़ गये, जो वासना के शैवाल से नहीं घिरा और कुबुद्धि लोग जिसकी भक्ति की गन्ध भी नहीं पा सके, ऐसा सुन्दर गुणकोष वाला श्री रामरूप एक अलौकिक नीलकमल कौसल्यारूप सरोवर में प्रकट हुआ।

पद्यानुवाद :

पाप पंक में न जायो, चन्द्र की किरन जाकी
कबहुँ न बाँकी झाँकी झौंकी कै चुरायो है।
विषयी मधुप नहिं प्रेम मकरन्द पिये
खल बन गज जाको वृन्त न नसायो है।
विषय सेवार ते जो कबहुँ न छन्न भयो
जाको न भजन गन्ध कुमतिन्ह पायो है।
रघुबर इन्दीबर 'गिरिधर' सुख कर
कौसिला सरसि कोख सुख सरसायो है ॥श्री॥

अनापातापद्मा प्रगुणमकरन्दस्य करिणा
मनाघ्रातादानं क्वचिदपि न लुब्धस्सुमनसाम्।
अनाभ्यस्तो योषा दृगुदजपुटे सन्मुखरितः
षड़ङ्गः कौसल्याञ्चलकमलगोऽभून्मधुकरः॥८॥

भावानुवाद : जिसने लक्ष्मी रूप कमलिनी के आनन्द–मकरन्द का पान नहीं किया अर्थात् प्राप्त राज्यलक्ष्मी का त्याग करके दण्डकविपिनबिहारी बन गया, जिसने रावण आदि उन्मत्त हाथियों

के वैभव मद को सूँघा तक नहीं तथा जो देवदुर्लभ साम्राज्य पर एवं परस्त्रियों के सौन्दर्यपुष्प पर लुब्ध होकर कभी भी मँड़राया नहीं जो श्रीसीता जी के अतिरिक्त किसी भी युवती के नेत्र कमल में निवास का अभ्यासी नहीं बना, जो सन्तों के समक्ष ही वरदान देने के लिए मुखरित हुआ, ऐसा ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान, वैराग्यरूप छः चरणों से युक्त प्रभु श्रीराघवरूप एक अनुपम भ्रमर प्रकट होकर आज श्री कौसल्या जी के अञ्चल रूप कमल में विराजमान हो गया।

पद्यानुवाद :

इन्दिरा कमलिनि को राग रस जो न पियो
गज मद गंध जाको नेकु न लुभायो है।
कबहुँ न सपनेहुँ सुरपुर राज पर
नारि कुसुमन पर भूलि मँड़रायो है।
कबहुँ न बस्यो पर तिय दृग कमलनि
संतन बिलोकि गुंजि सुजन रमायो है।
"गिरिधर" ईस षड़ गुन छ चरन भृङ्ग
कौसिला आँचर कंज बसि सुख पायो है ॥श्री॥

फलश्रुतिः

अष्टौ शुभाः शिखरिणीः शिशु राघवस्य
प्राकट्य भावकलिता कलकल्पनाढ्याः।
गीताः पठन् गिरिधरेण च रामभद्रा–
चार्येण राघवपदे रतिमेतु लोकः॥

भावानुवाद : इस प्रकार काव्य क्षेत्र में 'गिरिधर' नाम से प्रसिद्ध मुझ तुलसीपीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य द्वारा बालरूप भगवान् श्रीराम प्रभु राघव के श्री प्राकट्य के उपलक्ष्य में स्वयं की अनुभूत श्रेष्ठ कल्पनाओं से समलंकृत अपने ही शब्दों में विरचित तथा अपने ही स्वरों में गाई हुई मेरी इन आठ शिखरिणियों को भक्तिपूर्ण हृदय से पढ़ते हुए विश्व के सभी बहन-भाई, श्री वैष्णव संत जन, भगवान् श्रीराघव सरकार के श्रीचरणकमल में प्रेमलक्षणा भक्ति प्राप्त करें ऐसा मेरा आशीर्वाद एवं शुभकामना है।

पद्यानुवाद :

बालरूप राम शिशु राघव मुकुन्द जू को
ललित प्राकट्य भव्य भाव उमगायो है।
राघव की प्रेरणा सुमति सुरभाषा बद्ध
आठ शिखरिणी छन्द ललित बनायो है।
रामभद्राचार्य रामानन्दाचार्य गिरिधर
कवि कविताई करि कीरति सुनायो है।
पढ़ि के सुजन लहो राघव चरन रति
बिमल असीस ऐसो मेरो मन भायो है॥

॥ श्रीराघवः शन्तनोतु ॥

धर्मचक्रवर्ती श्रीतुलसीपीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानन्दाचार्य
स्वामी श्रीरामभद्राचार्यजी महाराज द्वारा प्रणीत

भगवान् श्रीसीताराम जी की

नीराजना

वन्दे श्रीरामं प्रभु वन्दे श्रीरामम्।
मुनिजनमनोभिरामं नवमेघश्यामम् ।।जय राम जय श्रीराम।।
पूर्णब्रह्मनिष्कामं पूरितजनकामम् प्रभु पूरितजनकामम्।
निजजनशोकविरामं ब्रीडितशतकामम् ।।जय राम जय श्रीराम।।
तरुणतमालमनोहर रघुवर दनुजारे प्रभु रघुवरदनुजारे।
तूणशरासनशरधर दीनं पाहि हरे।।जय राम जय श्रीराम।।
समरनिहतदशकन्धर सेवकभयहारिन् प्रभु सेवकभयहारिन्।
भवपाथोनिधिमन्दर दण्डकवनचारिन् ।।जय राम जय श्रीराम।।
विधुमुखजलजविलोचन पीताम्बरधारिन् प्रभुपीताम्बरधारिन्।
कोसलपुरजनरंजन हनुमत्सुखकारिन् ।।जय राम जय श्रीराम।।
भरतचकोरनिशेषं रिपुसूदनबन्धुम् प्रभु रिपुसूदनबन्धुम्।
शरणागतसुरधेनुं नौमि कृपासिन्धुम् ।।जय राम जय श्रीराम।।
जय जय भुवनविमोहन जय करुणासिन्धोप्रभु जय करुणासिन्धो।
जय सीतावर सुन्दर जय लक्ष्मणबन्धो ।।जय राम जय श्रीराम।।
दर्शय निजमुखकमलं भवसागरसेतो प्रभु भवसागरसेतो।
हर 'गिरधर' भवभारम् दिनकरकुलकेतो ।।जय राम जय श्रीराम।।

॥ श्री ॥

जीवन के पञ्चपाथेय

१. भगवान् श्रीसीताराम जी की शरणागति में प्राणिमात्र का अधिकार है।

२. हिन्दुत्वभावना एक ऐसी गंगा है जिसके स्पर्श से समस्त संसार पवित्र हो सकता है।

३. वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था ही सनातन धर्म का मूलमंत्र है।

४. जगत् को स्वभाव से जीतो प्रभाव से नहीं।

५. वैष्णवता ही मानवता की संजीवनी सुधा है।

सर्वाम्नाय अनन्त श्रीसमलंकृत श्रीतुलसीपीठाधीश्वर
धर्मचक्रवर्ती जगद्गुरु रामानन्दाचार्य
स्वामी श्रीरामभद्राचार्य जी महाराज
(चित्रकूटधाम)